DR. RANJEET KUMAR
Dept. Of History
H. D. Jain College Ara
B.A , sem.- 4, MJC-4, unit-5

यूरोप में क्रांति Revolutions in Europe

1848 ई. में यूरोप के कई हिस्सों में एक साथ व्यापक स्तर पर सामाजिक और राजनीतिक विद्रोह हुए जिन्हें इतिहास में “Revolutions of 1848” या “लोकों का वसंत (Springtime of the Peoples)” कहा जाता है. यह यूरोप के इतिहास में सबसे व्यापक क्रांतिकारी आंदोलन था, जिसने एक साथ कई देशों के तंत्र को चुनौती दी.

इन क्रांतियों का मुख्य लक्ष्य पुरानी, निरंकुश मोनार्किकल (राजशाही) व्यवस्थाओं को बदलकर लोकतांत्रिक, संवैधानिक और राष्ट्रीय एकीकरण के आधार पर नए शासन प्रणाली स्थापित करना था.

1848 की क्रांतियाँ लगभग जनवरी 1848 से अक्टूबर 1849 के बीच फैली और इनका प्रभाव यूरोप के लगभग सभी बड़े हिस्सों पर पड़ा.

पृष्ठभूमि और कारण

1848 की क्रांतियाँ अचानक नहीं आईं. इसके पीछे कई राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कारण थे:

1. राजनीतिक असंतोष

यूरोप में 1815 के बाद वियना की संधि के अनुसार स्थापित रूढ़िवादी शासन के खिलाफ बढ़ती नाराज़गी थी. लोग राजनीतिक भागीदारी, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, प्रेस और भाषण की आज़ादी चाहते थे.

2. उदारवाद और राष्ट्रीयता का उदय

उदारवादी विचारों ने लोगों में संविधानवाद, प्रतिनिधित्व और व्यक्तिगत अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाई. वहीं राष्ट्रवाद ने विभिन्न जातीय समूहों को अपने अलग राष्ट्रीय राज्य की कल्पना दी.

3. आर्थिक संकट

1845–47 की अवधि में खराब कृषि उत्पादन (जैसे आलू की फसल की विफलता), बेरोज़गारी और महंगाई ने लोगों की जीवन स्थितियों को बुरी तरह प्रभावित किया और असंतोष को जन्म दिया.

इन सभी कारणों ने मिलकर यूरोप के कई हिस्सों में राजशाही के खिलाफ विद्रोह की स्थिति तैयार की.

मुख्य घटनाओं का क्रम और विस्तार

1848 की क्रांतियाँ पूरे यूरोप में फैल गईं, फिर भी हर देश का आंदोलन अलग रूप में सामने आया. नीचे विस्तृत रूप से महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन है:

1. फ्रांस: फरवरी क्रांति (French Revolution of 1848)

1848 की क्रांतियों की शुरुआत मुख्यतः फ्रांस से हुई. वहाँ जनता सरकार की नीतियों, बेरोज़गारी और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की मांग लेकर सड़कों पर निकली.

फरवरी 1848 में शुरू हुए विरोध के दबाव में

राजा लुई फिलिप्पे (Louis Philippe) को पदत्याग करना पड़ा

फ्रांसीसी मोनार्की समाप्त हुई

और दूसरी गणराज्य (Second Republic) स्थापित की गई.

फ्रांस की सफलता ने पूरे यूरोप को आंदोलन के लिए प्रेरित किया.

2. ऑस्ट्रिया और हंगरी में विद्रोह

ऑस्ट्रियन साम्राज्य में भी लोगों ने

नागरिक अधिकार,

संविधान,

और राष्ट्रीयता के लिए मांगें उठाईं.

हंगरी में क्रांतिकारियों ने स्वायत्तता और राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग की. हालांकि यह विद्रोह अंततः दबा दिया गया, अंगूठे पर राष्ट्रीयता के विचार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

3. जर्मन राज्यों में आंदोलन

जर्मनी के विभाजित राज्यों में, खासकर प्रूसिया और ऑस्ट्रियन नियंत्रण वाले क्षेत्रों में,

राजशाही के खिलाफ संविधान की मांग की गई

राष्ट्रीय एकीकृत जर्मन राज्य (German unity) का विचार उभरा.

फ्रेंकफर्ट असेंबली (Frankfurt Assembly) के अंतर्गत एकजुट जर्मनी के लिए संविधान तक की योजना बनाई गई.

लेकिन अंततः यह असेंबली विफल रही और राजशाही पुनः नियंत्रण में आई.

4. इटली में क्रांति और राष्ट्रवाद

इटैलियन राज्यों (जैसे मिलान, टस्कनी, रोम) में भी विद्रोह हुआ जिसमें

ऑस्ट्रियाई शासन के खिलाफ लड़ाई

और 'इटली को एक राष्ट्र' के रूप में जोड़ने के विचार सामने आए.

मिलान की पांच दिवसीय लड़ाई (Five Days of Milan) में स्थानीय लोगों ने ऑस्ट्रियाई सेना को बाहर करने में सफलता पाई, लेकिन पूरे आंदोलन को फिर भी रोका गया.

5. वलाचिया (Wallachia) की क्रांति

रोमेनियाई हिस्से में वलाचिया में भी उदारवादी और राष्ट्रीय आंदोलनों का उभार हुआ. वहाँ के विद्रोहियों ने

प्रांतीय सरकार को बदल दिया,

लेकिन अंततः रूसी और ऑटोमन हस्तक्षेप के कारण क्रांति बंद कर दी गई.

6. जून दिवस (June Days) – मजदूरों का विरोध

फ्रांस में जून 1848 में मजदूरों का एक बड़ा विद्रोह हुआ जब नयी गणराज्य सरकार ने राष्ट्रीय कार्यशालाओं (National Workshops) को बंद करने का निर्णय लिया.

इस आंदोलन को सेना द्वारा कड़ी गति से दबा दिया गया और हजारों लोग मारे गए या निर्वासित किए गए.

1848 की क्रांतियों का नतीजा और परिणाम

अधिकांश देशों में 1848 के विद्रोह अंततः असफल रहे. लेकिन उनकी वजह से कई महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक बदलाव हुए:

1. तत्काल प्रभाव

कई देश पहले की तरह राजशाही के नियंत्रण में लौट आए.

लेकिन कुछ देशों में संवैधानिक और प्रतिनिधि संस्थाओं का गठन हुआ.

फ्रांस में गणराज्य स्थापित हुई, हालांकि बाद में बाद के राजनीतिक घटनाओं से मोनार्की का उदय फिर हुआ.

2. दीर्घकालिक प्रभाव

यूरोप के राजशाही शासन में बदलाव की प्रक्रिया शुरू हुई.

राष्ट्रवाद और लोकतंत्र के विचार लोगों में अधिक मजबूत हुए.

सेर्फडम (serfdom) जैसे प्रथा कई हिस्सों में हटाए गए.

जैसे-जैसे समय बीता, मजदूर संघों और समाजवादी विचारों ने राजनीति में स्थायी भूमिका बनाई.

1848 की क्रांतियाँ क्यों महत्वपूर्ण हैं?

1848 की क्रांतियाँ केवल विद्रोह का समूह नहीं थीं. वे कई बड़े बदलाव की शुरुआत थीं:

1. अभिव्यक्ति की आज़ादी और प्रतिनिधित्व

लोगों ने सत्ता में भागीदारी, संविधान और व्यक्तिगत आज़ादी की मांग की.

2. राष्ट्रवाद का उदय

विभिन्न जातियों और समूहों ने अपनी अलग पहचान, संस्कृति और राज्य की मांग की.

3. सामाजिक न्याय और श्रमिक अधिकार की बुनियाद

मजदूरों और गरीब वर्ग ने भी राजनीतिक प्रक्रिया में अपनी भूमिका मांगी, जो बाद में श्रमिक अधिकारों के आन्दोलन में बदल गई.

1848 की क्रांतियाँ एक साथ कई देशों में फैले बड़े पैमाने पर राजनीतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय आंदोलन थे. ये पुराने राजशाही शासन को चुनौती देने, लोकतांत्रिक विचारों को फैलाने और राष्ट्रवाद को सशक्त करने वाली घटनाएँ थीं. भले ही अधिकांश विद्रोह असफल रहे, लेकिन इन्हें यूरोप के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है.